तृतीय प्रश्न–पत्र – पंचकर्म परिचय

कुल अंक–100 (मुख्य परीक्षा –90, आन्तरिक परीक्षा–10)

1. पंचकर्म की परिभाषा एवं परिचय।
2. पंचकर्म की मूल अवधारणा, सिद्धान्त एवं उद्देश्य।
3. पंचकर्म चिकित्सा का महत्व एवं पंचकर्म में प्रयुक्त होने वाली औषधियां।
4. पंचकर्म चिकित्सा कक्ष का विवरण।
5. पंचकर्म चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों का परिचय एवं संरक्षण विधियां।
6. स्नेहन कर्म परिभाषा व प्रकार विधि, औषधि विधि एवं प्रबन्धन, स्नेहन कर्म के योग्य रोगी एवं अयोग्य रोगी, अतिस्नेहित के लक्षण, उपद्रव एवं तत्तकालिक व्यवस्था।
7. स्वेदन कर्म परिभाषा व प्रकार, विधि, औषधि विधि एवं प्रबन्धन, स्वेदन कर्म के योग्य रोगी एवं अयोग्य रोगी, अतिस्वेदित के लक्षण, उपद्रव एवं तात्कालिक व्यवस्था।
8. वनम कर्म परिभाषा एवं प्रकार, विधि, औषधि विधि एवं प्रबन्धन, वमन कर्म के योग्य रोगी एवं अयोग्य रोगी।
9. विरेचन कर्म परिभाषा व प्रकार, विधि, औषधि एवं प्रबन्धन, वमन कर्म के योग्य रोगी एवं अयोग्य रोगी।
10. अनुवासन कर्म परिभाषा व प्रकार विधि, औषधि विधि एवं प्रबन्धन, अनुवासन कर्म के योग्य रोगी और अयोग्य रोगी।
11. शिरोविरेशन कर्म परिभाषा व प्रकार, विधि, औषधि विधि एवं प्रबन्धन, शिरोविरेचन कर्म के योग्य रोगी और अयोग्य रोगी।
12. आस्थापना कर्म परिभाषा व प्रकार, विधि, औषधि विधि एवं प्रबन्धन, आस्थापन कर्म के योग्य रोगी एवं अयोग्य रोगी।
13. पंचकर्म में मात्रावस्ति, अनुवांसन वस्ति, निरूह वस्ति, उत्तर वस्ति, अन्य प्रकार एवं नस्य।
14. शिरोधारा, शिरोवस्ति, पिण्डस्वेदन, अन्नलेप, कायसेक, शिरोलेप।